तदाशु कर्त्तुं त्वयि जिह्ममुद्यते विधीयतां तत्र विधेयमुत्तरम्।

परप्रणीतानि वचांसि चिन्वतां प्रवृत्तिसारा: खलु मादृशां गिर: ॥२५॥

अन्वय-

तत् त्वयि जिह्मम् कर्त्तुम् उद्यते, तत्र विधेयम् उत्तरम् आशु विधीयताम्। परप्रणीतानि वचांसि चिन्वतां मादृशां गिर: प्रवृत्तिसारा: खलु ॥ २५॥

अर्थ-

अतएव आप के साथ कपट एवं कुटिलता का आचरण करने में उद्यत उस दुर्योधन के साथ उचित उत्तर देने वाली कार्यवाही आप शीघ्र करें। दूसरों की कही गई बातों को भुगताने वाले सन्देशहारी मुझ जैसे लोगो की बातें तो केवल परिस्थिति की सूचना मात्र देती हैं ॥२५॥

टिप्पणी-

दूत का तात्पर्य यह है कि अब आपको उस दुर्योधन के साथ क्या करना चाहिये, इसका शीघ्र निर्णय पर लें। इस सम्बन्ध में मेरे जैसे लोग तो यही कर सकते हैं कि जो कुछ वहाँ देखकर आये हैं, उसकी सूचना आप को दे दें। क्या करना चाहिये, इस सम्बन्ध में सम्मति देने के अधिकारी हम जैसे लोग नहीं हैं। यहाँ अर्थान्तरन्यास अलंकार है ।

इतीरयित्वा गिरमात्तसत्क्रिये गतेऽथ पत्यौ वनसन्निवासिनाम्।

प्रविश्य कृष्णासदनं महीभुजा तदाचचक्षेऽनुजसन्निधौ वचः ॥२६॥

अन्वय –

अथ वनसन्निवासिनाम् पत्यौ इति गिरम् ईरयित्वा, आत्तसत्क्रिये गते (सति), महीभुजा कृष्णासदनं प्रविश्य अनुजसन्निधौ तत् वचः आचचक्षे ॥२६॥

अर्थ-

उपर्युक्त बातें कह कर, पारितोषिक द्वारा सत्कृत उस वनवासी चर के (वहाँ से) चले जाने के अनंतर राजा युधिष्ठिर द्रौपदी के भवन में प्रविष्ट हो गये और वहां उन्होंने अपने छोटे भाइयों की उपस्थिति में वे सारी बातें द्रौपदी को कह सुनाई ॥२६॥

टिप्पणी-

वह वनवासी चर दुर्योधन की गोपनीय बातो की सूचना देकर उचित पुरस्कार द्वारा सम्मानित होकर जब चला गया, तब राजा युधिष्ठिर ने वे सारी बातें अपने छोटे भाइयो से तथा द्रौपदी से भी जाकर बता दी। यहाँ पदार्थहेतुक काव्यलिङ्ग अलङ्कार है।